2021

(Held in 2022)

HINDI

Paper : HIN-SE-3014

(कार्यालयीन अनुवाद)

(Skill Enhancement Course)

Full Marks : 50

Time : 2 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×5=5

(क) सर्जनात्मक भाषा क्या है?

(ख) संविधान के किस अनुच्छेद में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है?

(ग) यांत्रिक भाषा का आशयं क्या है?

(घ) पारिभाषिक शब्द किसे कहते हैं?

(ङ) संक्षेपण से मिलता-जुलता एक शब्द लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अत्यंत संक्षेप में उत्तर दीजिए : 2×3=6

(क) उन्नत आलेखन किसे कहते हैं?

(ख) राजभाषा और राष्ट्रभाषा के दो अंतर बताइए।

(ग) राष्ट्रभाषा हिन्दी की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 5×3=15

(क) टिप्पण की एक रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

(ख) संविधान के अनुच्छेद 351 में संकेतित हिन्दी का भावी रूप क्या है?

(ग) शिक्षण-माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

(घ) संविधान के अनुच्छेद 343(II) में क्या है? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) "संचार भाषा बोलचाल की भाषा से अलग होती है।" प्रस्तुत कथन का खुलासा कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **दो** के सम्यक् उत्तर दीजिए : 8×2=16

(क) राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति पर प्रकाश डालिए।

(ख) राजभाषा अधिनियम, 1963 में क्या-क्या प्रावधान हैं? उल्लेख कीजिए।

(ग) वर्तमान के संदर्भ में कम्प्यूटर की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

(घ) लैपटॉप और टैबलेट की आवश्यकता को रेखांकित कीजिए।

5. उपयुक्त शीर्षक देकर निम्नलिखित गद्यांश का संक्षेपण कीजिए : 1+7=8

मनुष्य उत्सव प्रिय होते हैं। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनंद-प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है। पर उस सुख और उत्सव के इस आनंद में बड़ा अंतर है। आवश्यकता अभाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किसी बात की कमी है। मनुष्य जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गयी है। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिन्ता उसे सताती ही रहती है। इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यंत क्षणिक होता है, क्योंकि तुरंत ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यही नहीं उस दिन हम अपने काम-काज छोड़कर विशुद्ध आनंद की प्राप्ति करते हैं। यह आनंद जीवन का आनंद है, काम का नहीं। उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को भूलकर केवल मनुष्य का ख्याल करते हैं। उस दिन हम अपनी स्वार्थ-चिन्ता छोड़ देते हैं, कर्तव्य भार की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को भूल जाते हैं। उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, स्वच्छंदता आ जाती है। उस रोज हमारी दिनचर्या बिल्कुल नष्ट हो जाती है। व्यर्थ घूमकर, व्यर्थ

काम कर, व्यर्थ खा-पीकर हम लोग अपने मन में यह अनुभव करते हैं कि हम लोग सच्चा आनंद पा रहे हैं।

अथवा

"वन रहेंगे तो हम रहेंगे।" प्रस्तुत कथन का पल्लवन कीजिए। 8

★★★